International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

A Study of Value Orientation among Higher Education Teachers: With Special Reference to Teachers of Commerce and Economics

Mr. Ashish Khare[1], Dr.Mahendra Kumar[2]

[1]Research Scholar, Institute of Education, Bundelkhand University, Jhansi

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के झाँसी मंडल के स्नातक स्तर पर कार्यरत वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के शिक्षकों के मूल्य-अभिविन्यास का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन का क्षेत्र उत्तर प्रदेश का झाँसी मंडल था तथा जनसंख्या में चयनित महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र का अध्यापन करने वाले शिक्षक सम्मिलित थे। अध्ययन के लिए कुल 200 शिक्षकों का प्रतिदर्श चयनित किया गया, जिसमें 100 वाणिज्य शिक्षक तथा 100 अर्थशास्त्र शिक्षक सम्मिलित थे। शिक्षकों के मूल्य-अभिविन्यास के मापन हेतु मानकीकृत मूल्य-अध्ययन उपकरण/मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, जिसमें दस प्रमुख मूल्य-आयाम सम्मिलित थे। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा स्वतंत्र समूहों के t-परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि धार्मिक, सौंदर्यात्मक, आर्थिक, सुखवादी तथा शक्तिवादी मूल्यों में वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के शिक्षकों के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया। अर्थशास्त्र के शिक्षक धार्मिक, सौंदर्यात्मक एवं सुखवादी मूल्यों में वाणिज्य के शिक्षकों से उच्च स्तर पर पाए गए, जबकि वाणिज्य के शिक्षक आर्थिक एवं शक्तिवादी मूल्यों में उच्च स्तर पर पाए गए। इसके विपरीत सामाजिक, प्रजातांत्रिक, ज्ञानवादी, पारिवारिक तथा स्वास्थ्य मूल्यों में दोनों समूहों के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः अध्ययन से निष्कर्षित होता है कि वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के उच्च शिक्षा शिक्षकों के मूल्य-अभिविन्यास में समानता एवं भिन्नता दोनों विद्यमान हैं।

प्रमुख शब्द : शिक्षक, मूल्य-अभिविन्यास, उच्च शिक्षा, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, शिक्षक मूल्य, मूल्य-शिक्षा, झाँसी मंडल।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास का प्रमुख माध्यम है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति केवल ज्ञान एवं कौशल अर्जित नहीं करता, बल्कि वह अपने जीवन के उद्देश्यों, व्यवहार के मानकों, सामाजिक उत्तरदायित्वों तथा नैतिक निर्णयों के संबंध में भी दृष्टिकोण विकसित करता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक अपने ज्ञान, व्यवहार, दृष्टिकोण, निर्णय एवं पारस्परिक संबंधों के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से आदर्श प्रस्तुत करता है।

मूल्य व्यक्ति के व्यवहार को दिशा प्रदान करने वाले अपेक्षाकृत स्थायी मानदंड हैं। वे यह निर्धारित करने में सहायता करते हैं कि व्यक्ति किसी परिस्थिति में क्या उचित, वांछनीय या महत्वपूर्ण मानता है। उपलब्ध शोध सामग्री में भी मूल्यों को व्यक्ति के दृष्टिकोण, चुनाव, निर्णय एवं व्यवहार को प्रभावित करने वाले मानकों के रूप में देखा गया है।

शिक्षा मूल्य-विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम है और शिक्षक इस प्रक्रिया के केंद्रीय वाहक हैं।
वर्तमान उच्च शिक्षा व्यवस्था तेजी से परिवर्तित हो रही है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, बाजार-आधारित अर्थव्यवस्था, प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद, सामाजिक परिवर्तन और डिजिटल माध्यमों के विस्तार ने शिक्षकों की भूमिका को अधिक जटिल बनाया है। आज शिक्षक से केवल विषय विशेषज्ञ होने की अपेक्षा नहीं की जाती, बल्कि उससे नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, संवेदनशीलता, नेतृत्व, नवाचार तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता की भी अपेक्षा की जाती है।
इस संदर्भ में शिक्षक के मूल्य-अभिविन्यास का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। शिक्षक जिन मूल्यों को अपने जीवन और पेशे में प्राथमिकता देता है, वे उसके शिक्षण व्यवहार तथा विद्यार्थियों के साथ उसके संबंधों को प्रभावित कर सकते हैं। शिक्षक का धार्मिक मूल्य-अभिविन्यास उसके नैतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण को, सामाजिक मूल्य उसका सहयोगात्मक व्यवहार, प्रजातांत्रिक मूल्य उसका सहभागी दृष्टिकोण, आर्थिक मूल्य संसाधनों एवं आर्थिक उपलब्धियों के प्रति उसका दृष्टिकोण, ज्ञानवादी मूल्य ज्ञान एवं तार्किकता के प्रति उसकी प्रतिबद्धता तथा शक्तिवादी मूल्य नेतृत्व एवं प्रभाव के प्रति उसकी प्रवृत्ति को प्रतिबिंबित कर सकते हैं।
वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र दोनों उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण विषय हैं, लेकिन उनकी विषय-वस्तु एवं व्यावसायिक अभिविन्यास में कुछ भिन्नताएँ हैं। वाणिज्य का संबंध व्यापार, लेखांकन, वित्त, प्रबंधन, बाजार तथा व्यावसायिक गतिविधियों से अधिक प्रत्यक्ष रूप से है। दूसरी ओर अर्थशास्त्र का संबंध संसाधनों, उत्पादन, वितरण, उपभोग, आर्थिक व्यवहार, सामाजिक-आर्थिक संरचना तथा नीतिगत विश्लेषण से है। इस विषयगत अंतर के कारण यह संभावना उत्पन्न होती है कि दोनों विषयों के शिक्षकों के कुछ मूल्य-आयामों में अंतर हो सकता है। इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध-पत्र वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के उच्च शिक्षा शिक्षकों के मूल्य-अभिविन्यास को समझने का प्रयास करता है।

2. समस्या कथन

“उच्च शिक्षा के शिक्षकों में मूल्य-अभिविन्यास का अध्ययन: वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के शिक्षकों के विशेष संदर्भ में।”

3. अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

1. **शिक्षक की भूमिका** - शिक्षक विद्यार्थियों के लिए ज्ञान के स्रोत के साथ-साथ सामाजिक एवं नैतिक आदर्श का कार्य भी करता है। शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करता है। इसलिए शिक्षक के मूल्य-अभिविन्यास का अध्ययन शैक्षिक गुणवत्ता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।
2. **उच्च शिक्षा में मूल्य-संकट** - वर्तमान समय में उच्च शिक्षा में व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा, रोजगार का दबाव, तकनीकी परिवर्तन तथा आर्थिक अपेक्षाएँ बढ़ी हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षकों के आर्थिक एवं व्यावसायिक मूल्यों के साथ मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों का संतुलन आवश्यक है।
3. **विषयगत प्रभाव** - वाणिज्य और अर्थशास्त्र की विषयगत प्रकृति अलग-अलग होने के कारण शिक्षकों के आर्थिक, शक्तिवादी, सौंदर्यात्मक, धार्मिक अथवा सुखवादी मूल्यों में संभावित भिन्नता का अध्ययन महत्वपूर्ण है।
4. **शिक्षक-प्रशिक्षण** - यदि कुछ मूल्य-आयामों में शिक्षकों के बीच उल्लेखनीय अंतर पाया जाता है, तो शिक्षक विकास कार्यक्रमों एवं सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में मूल्य-आधारित घटकों को सम्मिलित किया जा सकता है।
5. **क्षेत्रीय महत्व** - झाँसी मंडल के संदर्भ में इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययनों की सीमित उपलब्धता के कारण यह अध्ययन क्षेत्रीय उच्च शिक्षा व्यवस्था को समझने में उपयोगी हो सकता है। उपलब्ध शोध सामग्री में भी झाँसी

मंडल के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के मूल्यों पर तुलनात्मक अध्ययनों की आवश्यकता को शोध-अंतराल के रूप में रेखांकित किया गया है।

4. अध्ययन का उद्देश्य

झाँसी मंडल के स्नातक स्तर पर कार्यरत वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के शिक्षकों के मूल्य-अभिविन्यास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. परिकल्पना

उत्तर प्रदेश के झाँसी मंडल के स्नातक स्तर के वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के शिक्षकों के मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है।

6. प्रमुख संकल्पनाओं का क्रियात्मक अर्थ

1. मूल्य - प्रस्तुत अध्ययन में मूल्य से आशय उन मान्यताओं, प्राथमिकताओं एवं आदर्शों से है जो शिक्षक के विचार, दृष्टिकोण, निर्णय एवं व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं।
2. मूल्य-अभिविन्यास - मूल्य-अभिविन्यास से आशय किसी शिक्षक द्वारा विभिन्न मूल्य-आयामों को दिए जाने वाले महत्व एवं प्राथमिकता से है।
3. उच्च शिक्षा के शिक्षक - इस अध्ययन में उच्च शिक्षा के शिक्षक से आशय झाँसी मंडल के चयनित महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र विषय का अध्यापन करने वाले शिक्षकों से है।
4. वाणिज्य शिक्षक - वाणिज्य विषय का स्नातक स्तर पर अध्यापन करने वाले शिक्षक को वाणिज्य शिक्षक माना गया है।
5. अर्थशास्त्र शिक्षक - अर्थशास्त्र विषय का स्नातक स्तर पर अध्यापन करने वाले शिक्षक को अर्थशास्त्र शिक्षक माना गया है।

7. अध्ययन में मूल्य के प्रमुख आयाम

1. धार्मिक मूल्य - धार्मिक मूल्य नैतिकता, आस्था, आध्यात्मिकता, सदाचार तथा जीवन के नैतिक उद्देश्यों से संबंधित हैं।
2. सामाजिक मूल्य - सामाजिक मूल्य सहयोग, सामाजिक समायोजन, सहानुभूति, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सामुदायिक जीवन से संबंधित हैं।
3. प्रजातांत्रिक मूल्य - प्रजातांत्रिक मूल्य समानता, स्वतंत्रता, सहभागिता, न्याय, सहिष्णुता एवं लोकतांत्रिक निर्णय प्रक्रिया से संबंधित हैं।
4. सौंदर्यात्मक मूल्य - सौंदर्यात्मक मूल्य सुंदरता, रचनात्मकता, कला, सौंदर्यबोध एवं अभिव्यक्ति से संबंधित हैं।
5. आर्थिक मूल्य - आर्थिक मूल्य धन, संसाधन, आर्थिक सुरक्षा, उपयोगिता, लाभ तथा आर्थिक उपलब्धि को महत्व देने से संबंधित हैं।
6. ज्ञानवादी मूल्य - ज्ञानवादी मूल्य ज्ञानार्जन, सत्य की खोज, तार्किकता, बौद्धिक विकास तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित हैं।
7. सुखवादी मूल्य - सुखवादी मूल्य जीवन में आनंद, संतोष, व्यक्तिगत सुख तथा जीवन की गुणवत्ता को महत्व देने से संबंधित हैं।

8. शक्तिवादी मूल्य - शक्तिवादी मूल्य नेतृत्व, प्रभाव, नियंत्रण, अधिकार, निर्णय क्षमता तथा संगठनात्मक प्रभावशीलता से संबंधित हैं।
9. पारिवारिक मूल्य - पारिवारिक मूल्य परिवार, पारिवारिक संबंधों, उत्तरदायित्व एवं पारिवारिक एकता को महत्व देने से संबंधित हैं।
10. स्वास्थ्य मूल्य - स्वास्थ्य मूल्य शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, स्वास्थ्य-जागरूकता तथा स्वस्थ जीवनशैली से संबंधित हैं।

8. अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन **वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method)** पर आधारित है। अध्ययन का क्षेत्र **उत्तर प्रदेश का झाँसी मंडल** है तथा अध्ययन की जनसंख्या में झाँसी मंडल के चयनित महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र विषय का अध्यापन करने वाले शिक्षक सम्मिलित थे। अध्ययन के लिए **कुल 200 शिक्षकों का प्रतिदर्श** चयनित किया गया, जिसमें **100 वाणिज्य शिक्षक तथा 100 अर्थशास्त्र शिक्षक** सम्मिलित थे। शिक्षकों के मूल्य-अभिविन्यास के मापन हेतु **मानकीकृत मूल्य-अध्ययन उपकरण/मूल्य प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया, जिसमें धार्मिक, सामाजिक, प्रजातांत्रिक, सौंदर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञानवादी, सुखवादी, शक्तिवादी, पारिवारिक तथा स्वास्थ्य—इन दस प्रमुख मूल्य-आयामों को सम्मिलित किया गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए **मध्यमान (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) तथा स्वतंत्र समूहों के t-परीक्षण (Independent Samples t-test)** जैसी सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

9. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शिक्षकों के तुलनात्मक अध्ययन में दस मूल्य-आयामों का विश्लेषण किया गया।

तालिका 1 - वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के शिक्षकों के प्रमुख मूल्य-आयामों की तुलना

क्र. सं.	मूल्य-आयाम	अधिक मूल्य-स्तर वाला समूह	t-मूल्य	p-मूल्य	निष्कर्ष
1	धार्मिक	अर्थशास्त्र	3.46	0.001	सार्थक
2	सामाजिक	लगभग समान	1.44	0.520	असार्थक
3	प्रजातांत्रिक	लगभग समान	1.93	>0.05	असार्थक
4	सौंदर्यात्मक	अर्थशास्त्र	3.92	0.000	सार्थक
5	आर्थिक	वाणिज्य	2.73	0.007	सार्थक
6	ज्ञानवादी	लगभग समान	1.78	0.077	असार्थक
7	सुखवादी	अर्थशास्त्र	3.44	0.007	सार्थक
8	शक्तिवादी	वाणिज्य	4.25	0.000	सार्थक
9	पारिवारिक	लगभग समान	0.35	0.730	असार्थक
10	स्वास्थ्य	लगभग समान	0.94	0.349	असार्थक

- **धार्मिक मूल्य** - धार्मिक मूल्यों में अर्थशास्त्र के शिक्षकों का मध्यमान 11.24, जबकि वाणिज्य के शिक्षकों का मध्यमान 10.02 पाया गया। t-मूल्य 3.46 था तथा p-मूल्य 0.001 पाया गया, जो 0.05 स्तर से कम है। अतः दोनों समूहों के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया। अर्थशास्त्र के शिक्षक धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों में अपेक्षाकृत उच्च स्तर पर पाए गए। इससे संकेत मिलता है कि नैतिकता, आचार एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित मूल्य उनके मूल्य-अभिविन्यास में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण हैं।
- **सामाजिक मूल्य** - सामाजिक मूल्यों में अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य के शिक्षकों के बीच t-मूल्य 1.44 तथा p-मूल्य 0.52 पाया गया। यह अंतर सांख्यिकीय रूप से असार्थक है। इससे संकेत मिलता है कि सामाजिक समायोजन, सहयोग, सहानुभूति एवं समाजोपयोगी दृष्टिकोण दोनों समूहों में लगभग समान स्तर पर हैं। यह परिणाम शिक्षक के पेशे की सामाजिक प्रकृति से भी समझा जा सकता है। चाहे शिक्षक वाणिज्य का हो अथवा अर्थशास्त्र का, दोनों को विद्यार्थियों, सहकर्मियों एवं समाज के साथ निरंतर अंतःक्रिया करनी होती है।
- **प्रजातांत्रिक मूल्य** - प्रजातांत्रिक मूल्यों में दोनों समूहों के बीच प्राप्त अंतर 0.05 स्तर पर असार्थक पाया गया। अर्थशास्त्र के शिक्षकों का मध्यमान वाणिज्य शिक्षकों से थोड़ा अधिक था, किंतु अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं था। यह निष्कर्ष संकेत करता है कि स्वतंत्रता, समानता, सहभागिता, सहिष्णुता तथा लोकतांत्रिक दृष्टिकोण जैसे मूल्य दोनों विषयों के शिक्षकों में व्यापक रूप से समान हैं।
- **सौंदर्यात्मक मूल्य** - सौंदर्यात्मक मूल्यों में अर्थशास्त्र के शिक्षकों का मध्यमान 13.55, जबकि वाणिज्य के शिक्षकों का मध्यमान 12.80 था। t-मूल्य 3.92 तथा p-मूल्य 0.000 पाया गया। अतः अंतर सांख्यिकीय रूप से अत्यंत सार्थक है। इस परिणाम से संकेत मिलता है कि अर्थशास्त्र के शिक्षकों में रचनात्मकता, सौंदर्यबोध, अभिव्यक्ति तथा सौंदर्यात्मक संवेदनशीलता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।
- **आर्थिक मूल्य** - आर्थिक मूल्यों में वाणिज्य के शिक्षकों का मध्यमान 11.20 तथा अर्थशास्त्र के शिक्षकों का मध्यमान लगभग 10.05 पाया गया। t-मूल्य 2.73 तथा p-मूल्य 0.007 था, जो 0.05 से कम है। अतः दोनों समूहों के बीच सार्थक अंतर पाया गया। वाणिज्य शिक्षकों में आर्थिक मूल्यों की अपेक्षाकृत अधिकता को विषय की प्रकृति से जोड़ा जा सकता है। वाणिज्य शिक्षा व्यापार, वित्त, लेखांकन, लाभ-हानि, प्रबंधन तथा व्यावसायिक निर्णयों से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित होती है। इसलिए आर्थिक दृष्टिकोण का अधिक प्रबल होना विषयगत एवं व्यावसायिक अभिविन्यास के अनुरूप दिखाई देता है।
- **ज्ञानवादी मूल्य** - ज्ञानवादी मूल्यों में t-मूल्य 1.78 तथा p-मूल्य 0.077 प्राप्त हुआ। यह 0.05 स्तर पर असार्थक है। इससे संकेत मिलता है कि ज्ञानार्जन, बौद्धिक विकास, तार्किकता एवं सत्य की खोज से संबंधित मूल्य दोनों विषयों के शिक्षकों में लगभग समान हैं। यह परिणाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षक के पेशे में ज्ञान एवं बौद्धिक विकास मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। विषय चाहे वाणिज्य हो या अर्थशास्त्र, दोनों के शिक्षकों से निरंतर ज्ञान-विस्तार एवं विषयगत अद्यतन की अपेक्षा की जाती है।
- **सुखवादी मूल्य** - सुखवादी मूल्यों में अर्थशास्त्र के शिक्षकों का मध्यमान 10.64, जबकि वाणिज्य के शिक्षकों का मध्यमान 9.44 पाया गया। t-मूल्य 3.44 तथा p-मूल्य 0.007 था। अतः अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। अर्थशास्त्र के शिक्षकों में सुखवादी मूल्यों की अपेक्षाकृत अधिकता यह संकेत कर सकती है कि वे व्यक्तिगत संतोष, जीवन की गुणवत्ता, आनंद तथा जीवन-संतुलन को अपेक्षाकृत अधिक महत्व देते हैं।
- **शक्तिवादी मूल्य** - शक्तिवादी मूल्यों में वाणिज्य के शिक्षकों का मध्यमान 11.84, जबकि अर्थशास्त्र के शिक्षकों का मध्यमान लगभग 10.08 पाया गया। t-मूल्य 4.25 तथा p-मूल्य 0.000 था। अतः दोनों समूहों के बीच अत्यधिक सार्थक अंतर पाया गया। वाणिज्य शिक्षकों में शक्तिवादी मूल्यों का उच्च स्तर नेतृत्व, नियंत्रण, निर्णय

क्षमता, प्रभाव एवं संगठनात्मक दक्षता की ओर अपेक्षाकृत अधिक झुकाव का संकेत दे सकता है। वाणिज्य विषय में प्रबंधन एवं प्रशासनिक अभिविन्यास इस परिणाम की एक संभावित व्याख्या प्रस्तुत करता है।

- **पारिवारिक मूल्य** - पारिवारिक मूल्यों में प्राप्त t-मूल्य 0.35 तथा p-मूल्य 0.730 था। अंतर सांख्यिकीय रूप से असार्थक पाया गया। अतः वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के शिक्षकों में पारिवारिक संबंधों एवं उत्तरदायित्वों के प्रति दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। यह परिणाम बताता है कि पारिवारिक मूल्य विषयगत पृष्ठभूमि की अपेक्षा व्यापक सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन-अनुभवों से अधिक जुड़े हो सकते हैं।
- **स्वास्थ्य मूल्य** - स्वास्थ्य मूल्यों में t-मूल्य 0.94 तथा p-मूल्य 0.349 प्राप्त हुआ। यह अंतर सांख्यिकीय रूप से असार्थक है। अतः दोनों समूहों के शिक्षकों में स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण एवं जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

10. परिकल्पना का परीक्षण

अध्ययन की शून्य परिकल्पना थी— "वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।" प्राप्त परिणामों के आधार पर यह परिकल्पना पूर्णतः स्वीकृत नहीं की जा सकती।

क्र. सं.	मूल्य-आयाम	परिकल्पना की स्थिति
1	धार्मिक	अस्वीकृत
2	सामाजिक	स्वीकृत
3	प्रजातांत्रिक	स्वीकृत
4	सौंदर्यात्मक	अस्वीकृत
5	आर्थिक	अस्वीकृत
6	ज्ञानवादी	स्वीकृत
7	सुखवादी	अस्वीकृत
8	शक्तिवादी	अस्वीकृत
9	पारिवारिक	स्वीकृत
10	स्वास्थ्य	स्वीकृत

अतः शून्य परिकल्पना आंशिक रूप से अस्वीकृत होती है। उपलब्ध शोध-अध्ययन में भी स्पष्ट किया गया है कि सभी मूल्य-आयामों में समानता नहीं थी और पाँच विशिष्ट मूल्य-आयामों में सार्थक अंतर पाया गया।

11. चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के शिक्षकों के मूल्य-अभिविन्यास में व्यापक स्तर पर अनेक समानताएँ मौजूद हैं। सामाजिक, प्रजातांत्रिक, ज्ञानवादी, पारिवारिक तथा स्वास्थ्य मूल्यों में कोई सार्थक अंतर न मिलना यह संकेत करता है कि शिक्षक के पेशे से जुड़े कुछ मूल्य विषयगत सीमाओं से परे सार्वभौमिक स्वरूप रखते हैं। विशेष रूप से सामाजिक एवं प्रजातांत्रिक मूल्यों में समानता शिक्षक के सामाजिक उत्तरदायित्व एवं शैक्षिक भूमिका की समान प्रकृति को प्रतिबिंबित करती है। दोनों विषयों के शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ सहयोग, सहभागिता, संवाद, सहिष्णुता तथा समान व्यवहार करना होता है। ज्ञानवादी मूल्य में समानता भी

अपेक्षित है, क्योंकि उच्च शिक्षा का शिक्षक अपने विषय में ज्ञान का निर्माण एवं प्रसार करने वाला व्यक्ति होता है। इसलिए ज्ञानार्जन, तार्किकता तथा बौद्धिक विकास विषयगत अंतर से अपेक्षाकृत स्वतंत्र रह सकते हैं।

दूसरी ओर, धार्मिक, सौंदर्यात्मक, आर्थिक, सुखवादी तथा शक्तिवादी मूल्यों में पाए गए अंतर विषयगत एवं व्यावसायिक वातावरण की संभावित भूमिका की ओर संकेत करते हैं। उपलब्ध शोध-निष्कर्षों में भी यह स्पष्ट किया गया है कि विषय-विशेष का प्रभाव कुछ विशिष्ट मूल्य-आयामों पर अधिक दिखाई देता है, जबकि कुछ मूल्य अधिक सार्वभौमिक प्रकृति के होते हैं।

वाणिज्य शिक्षकों में आर्थिक एवं शक्तिवादी मूल्यों का उच्च होना वाणिज्य विषय की व्यावसायिक एवं प्रबंधकीय प्रकृति से संबंधित हो सकता है। वहीं अर्थशास्त्र शिक्षकों में धार्मिक, सौंदर्यात्मक एवं सुखवादी मूल्यों की अधिकता उनके सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण, व्यापक जीवन-दृष्टि तथा व्यक्तिगत जीवन-संतुलन से संबंधित अभिविन्यासों के संदर्भ में देखी जा सकती है।

हालाँकि इन निष्कर्षों को कारणात्मक रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। अध्ययन तुलनात्मक एवं सर्वेक्षण प्रकृति का है; इसलिए यह केवल समूहों के बीच पाए गए अंतर को दर्शाता है, यह निश्चित रूप से सिद्ध नहीं करता कि विषय का अध्ययन ही उन मूल्यों का कारण है।

12. शैक्षिक निहितार्थ

- मूल्य-आधारित शिक्षक विकास - उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों के लिए केवल विषयगत प्रशिक्षण ही नहीं, बल्कि मूल्य-आधारित व्यावसायिक विकास कार्यक्रम भी आयोजित किए जाने चाहिए।
- व्यावसायिक नैतिकता - वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र जैसे विषयों के शिक्षकों के लिए व्यावसायिक नैतिकता, पारदर्शिता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नैतिक आर्थिक व्यवहार से संबंधित प्रशिक्षण उपयोगी हो सकता है।
- लोकतांत्रिक शिक्षक व्यवहार - दोनों समूहों में प्रजातांत्रिक मूल्यों का तुलनात्मक रूप से समान स्तर पाया गया। इस सकारात्मक पक्ष को कक्षा में सहभागी शिक्षण, संवाद एवं आलोचनात्मक चिंतन के माध्यम से और मजबूत किया जा सकता है।
- सामाजिक उत्तरदायित्व - सामाजिक मूल्यों में समानता होने के बावजूद शिक्षकों को सामाजिक समस्याओं, समावेशन, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय तथा सामुदायिक सेवा से जोड़ना उपयोगी होगा।
- ज्ञानवादी मूल्यों को सुदृढ़ करना - ज्ञानवादी मूल्यों में समानता उच्च शिक्षा की दृष्टि से सकारात्मक है। इसे शोध, नवाचार, प्रकाशन, सेमिनार, कार्यशाला एवं सतत व्यावसायिक विकास के माध्यम से और विकसित किया जा सकता है।
- जीवन-संतुलन - अर्थशास्त्र शिक्षकों में सुखवादी मूल्यों का अपेक्षाकृत उच्च स्तर यह संकेत देता है कि जीवन-संतुलन एवं व्यक्तिगत संतोष जैसे विषयों को उच्च शिक्षा संस्थानों में भी महत्व दिया जाना चाहिए।
- नेतृत्व विकास - वाणिज्य शिक्षकों में शक्तिवादी मूल्यों का अपेक्षाकृत उच्च स्तर नेतृत्व एवं प्रबंधन संबंधी संभावनाओं से जुड़ा हो सकता है। इन क्षमताओं को सकारात्मक नेतृत्व, सहभागी प्रबंधन तथा संस्थागत विकास की दिशा में प्रयोग किया जाना चाहिए।

13. सुझाव

1. उच्च शिक्षा संस्थानों में Value-Oriented Faculty Development Programmes आयोजित किए जाएँ।
2. शिक्षकों के लिए व्यावसायिक नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित प्रशिक्षण नियमित रूप से आयोजित किया जाए।

3. शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में मूल्य-अभिविन्यास को महत्वपूर्ण घटक बनाया जाए।
4. उच्च शिक्षा में विषयगत ज्ञान के साथ मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को भी महत्व दिया जाए।
5. शिक्षकों में लोकतांत्रिक एवं सहभागी नेतृत्व को बढ़ावा दिया जाए।
6. आर्थिक एवं व्यावसायिक मूल्यों के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व के संतुलन पर बल दिया जाए।
7. शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य, कार्य-जीवन संतुलन एवं कल्याण से संबंधित संस्थागत कार्यक्रम विकसित किए जाएँ।
8. शिक्षकों में शोध, तार्किकता एवं ज्ञान-विस्तार की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया जाए।
9. भविष्य के अध्ययनों में शिक्षक की आयु, लिंग, अनुभव, पद, ग्रामीण-शहरी पृष्ठभूमि तथा संस्थान के प्रकार जैसे चरों को सम्मिलित किया जाए।
10. विभिन्न विषयों—शिक्षा, विज्ञान, कला, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र—के शिक्षकों का बहुविषयी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

14. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के उच्च शिक्षा शिक्षकों के मूल्य-अभिविन्यास में समानता और भिन्नता दोनों विद्यमान हैं। अध्ययन के दस मूल्य-आयामों में से पाँच—धार्मिक, सौंदर्यात्मक, आर्थिक, सुखवादी एवं शक्तिवादी—में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया, जबकि पाँच—सामाजिक, प्रजातांत्रिक, ज्ञानवादी, पारिवारिक एवं स्वास्थ्य—में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अर्थशास्त्र के शिक्षक धार्मिक, सौंदर्यात्मक एवं सुखवादी मूल्यों में वाणिज्य शिक्षकों से उच्च स्तर पर पाए गए। दूसरी ओर, वाणिज्य के शिक्षक आर्थिक एवं शक्तिवादी मूल्यों में अर्थशास्त्र के शिक्षकों से उच्च स्तर पर पाए गए।

यह निष्कर्ष इस संभावना को बल देता है कि शिक्षक का विषयगत एवं व्यावसायिक परिवेश उसके कुछ विशिष्ट मूल्य-अभिविन्यासों से संबद्ध हो सकता है। वाणिज्य की व्यापार, वित्त एवं प्रबंधन-उन्मुख प्रकृति आर्थिक तथा शक्तिवादी मूल्यों की अधिकता से संबंधित हो सकती है, जबकि अर्थशास्त्र की व्यापक सामाजिक-आर्थिक विश्लेषणात्मक प्रकृति धार्मिक, सौंदर्यात्मक एवं सुखवादी मूल्यों के साथ किसी सीमा तक जुड़ी हो सकती है।

इसके साथ ही सामाजिक, प्रजातांत्रिक, ज्ञानवादी, पारिवारिक एवं स्वास्थ्य मूल्यों में दोनों समूहों की समानता यह संकेत देती है कि शिक्षक की व्यावसायिक भूमिका से जुड़े कुछ मूल्य विषयगत सीमाओं से परे होते हैं। उपलब्ध शोध-अध्ययन भी इसी निष्कर्ष की पुष्टि करता है कि कुछ मूल्य अपेक्षाकृत सार्वभौमिक प्रकृति के होते हैं, जबकि कुछ विशिष्ट मूल्य विषय एवं व्यावसायिक परिवेश से प्रभावित हो सकते हैं।

अतः उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक विकास को केवल विषयगत दक्षता तक सीमित न रखा जाए, बल्कि उसमें नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, ज्ञानवादी अभिविन्यास, नेतृत्व, स्वास्थ्य एवं जीवन-संतुलन जैसे मूल्यों को भी समाहित किया जाए। मूल्यवान एवं उत्तरदायी शिक्षक ही विद्यार्थियों में मूल्यपरक, लोकतांत्रिक एवं मानवीय नागरिकता के विकास में प्रभावी भूमिका निभा सकता है।

15. References

1. Ajayi, J., & Mavuru, L. (2025). Pre-service teachers' understanding of how learners can be developed and equipped with constitutional values when teaching Life Sciences topics. South African Journal of Higher Education, 39(1), 28–46. https://doi.org/10.20853/39-1-6102
2. Aman, Y. (2021). Investigation of the effect of “Values education program with stories” on students' democratic attitude, moral maturity and target behavior development levels. International Journal of

Education Technology and Scientific Researches, 5(13), 1664–1710. https://doi.org/10.35826/ijetsar.218

3. Arden, A., Benita, M., Ohana, H., Chen, Y., & Benish-Weisman, M. (2026). Bridging the gap between students' values and classroom behaviour: The moderating role of self-determined motivation. Educational Psychology, 46(4), 598–619. https://doi.org/10.1080/01443410.2026.2622347
4. Gamage, K. A. A., Dehideniya, D. M. S. C. P. K., & Ekanayake, S. Y. (2021). The role of personal values in learning approaches and student achievements. Behavioral Sciences, 11(7), 102. https://doi.org/10.3390/bs11070102
5. Khathi, J. L., Ajani, O. A., & Govender, S. (2022). Exploring teachers' lived experiences on the integration of values education in South African high schools. Research in Social Sciences and Technology, 7(2), 108–128. https://doi.org/10.46303/ressat.2022.12
6. Meena, K. (2019). A comparative study of value education patterns of male and female pre-service teachers of urban and rural education and training institutes. International Research Journal of Management Sociology & Humanities, 10(5), 212–219.
7. Panda, M., & Sarangdhar, N. (2020). A study of personal values of student teachers in relation to their self-concept. Pedagogy of Learning, 4(2), 20–29.
8. Shrestha, B. K., & Gupta, P. (2019). Impact of value education in personal behaviour of students: A case study of Nepal. Nepal Journal of Multidisciplinary Research, 2(3), 1–8. https://doi.org/10.3126/njmr.v2i3.26285
9. शुक्ला, अ., एवं महतो, एस. के. (2021)। शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन: बिजनौर जनपद के संदर्भ में। Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 18(7), 165–178।
10. गुप्ता, एस. पी., एवं गुप्ता, अल्का। (2004)। शिक्षा मनोविज्ञान। शारदा पुस्तक भवन।
11. गुप्ता, एस. पी. (2011)। सांख्यिकी विधियाँ। शारदा पुस्तक भवन।
12. दुबे, सत्यनारायण। (2018)। मूल्य-शिक्षा। शारदा पुस्तक भवन।
13. देवागन, प्रतिभा। (2007)। विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में मूल्य शिक्षा का स्वरूप [पीएच.डी. शोध प्रबंध, शोधगंगा]। https://hdl.handle.net/10603/31219
14. यादव, रामलखन। (2020)। उच्च शिक्षा स्तर के छात्रों में मूल्य एवं व्यक्तित्व समायोजन [पीएच.डी. शोध प्रबंध, शोधगंगा]। https://hdl.handle.net/10603/584018